मात्स्यिकी

मात्स्यिकी क्षेत्र राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देता है और यह देश में लगभग 14.49 मिलियन लोगों को जीविका प्रदान कर रहा है। इसे एक सशक्त आय और रोजगार सृजनकर्त्ता के रूप में पहचाना गया है क्योंकि यह अनेक सहायक उद्योगों के विकास को गति देता है और विदेशी मुद्रा अर्जक के अलावा यह सस्ते और पोषक खाद्यान्न का भी स्रोत है। सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह है कि यह देश की आर्थिक रूप से पिछड़ी जनसंख्या के एक बहुत बड़े भाग का जीविका का स्रोत है। देश में मात्स्यिकी विकास जिन प्रमुख चुनौतियां का सामना कर रहा है उनमें शामिल हैं:- फिन और शैल मत्स्य पालन के लिए सतत प्रौद्योगिकियों का विकास, उत्पादन को अनुकूलतम बनाना, हार्वेस्ट और पोस्ट हार्वेस्ट संचालनों के लिए बुनियादी सुविधाएं तथा मात्स्यिकी यानों के लिए लैंडिंग और बर्थिंग सुविधाएं।

बलित क्षेत्र

मात्स्यिकी राज्य का विषय है और इस प्रकार इसके विकास की प्रमुख जिम्मेदारी राज्य सरकारों की है। मात्स्यिकी विकास में प्रमुख जोर उत्पादन और उत्पादकता को अनुकूलतम बनाने, समुद्री उत्पादों के निर्यात को बढ़ाने, रोजगार सृजित करने और मछुआरों के कल्याण और उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति को सुधारने पर रहा है।

मुख्य बिन्दु

- विगत वर्षों में देश में मत्स्य उत्पादन में महत्वपूर्ण तेजी आई है। भारत अब दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा मछली उत्पादक और दूसरा सबसे बड़ा ताजा जल मछली का उत्पादक है।
- वर्ष 2004-05 के दौरान मछली का उत्पादन 63.04 लाख टन था जिसमें 27.78 लाख टन समुद्री मछली और 35.26 लाख टन अंतर्देशीय मछली का योगदान था।
- वर्ष 2003-04 के दौरान मत्स्य बीज का उत्पादन 20810.51 मिलियन फ्राई रहा।
- ताजा जल जलकृषि के प्रचार प्रसार के लिए राज्यों और संघ शासित प्रदेशों को सभी संभावनापूर्ण जिलों को कवर करते हुए 429 मत्स्य उत्पादक विकास एजेंसियों(एफएफडीए) का एक नेटवर्क स्थापित किया गया है।
- लघु क्षेत्र के झींगापालकों को तकनीकी, वित्तीय और आगे समर्थन प्रदान करने की बात को ध्यान में रखते हुए सभी तटवर्ती राज्यों तथा अंडमान और संघ शासित क्षेत्र निकोबार द्वीपसमूह में 39 खारा जल मत्स्यपालक विकास एजेसियों को स्थापित किया गया है।
- वर्ष 2004-05 तक एफएफडीए के माध्यम से 6.74 लाख हैक्टेयर के जलीय क्षेत्र को वैज्ञानिक मत्स्यपालन के तहत लाया गया था।

- परंपरागत नौकाओं के मोटरीकरण के लिए केन्द्रीय प्रायोजित योजना के तहत कुल लगभग 42,950 नौकाओं को अब तक मोटरीकृत किया जा चुका है।
- समुद्री मात्स्यिकी से संबंधित मूलभूत सुविधाओं के विकास के लिए केन्द्रीय प्रायोजित योजना के तहत भारत सरकार ने 6 प्रमुख मत्स्यन बंदरगाहों, 58 छोटे मत्स्यन बंदरगाहों और 189 मछली उतारने के केन्द्रों की मंजूरी दी है। इनमें से 6 प्रमुख मछली उतारने वाले बंदरगाह, 40 छोटे मत्स्यन बंदरगाह और 151 मछली उतारने के केन्द्रों का काम पूरा हो चुका है और उनका उपयोग हो रहा है। शेष बचे 18 मत्स्यन बंदरगाह और 38 मछली उतारने के केन्द्र निर्माण के विभिन्न चरण में हैं।

मत्स्य उत्पादन

(लाख टन में)

वर्ष	समुद्री	अंतर्देशीय	कुल
1991-92	24.47	17.10	41.57
1992-93	25.76	17.89	43.65
1993-94	26.49	19.95	46.44
1994-95	26.92	20.97	47.89
1995-96	27.07	22.42	49.49
1996-97	29.67	23.81	53.48
1997-98	29.50	24.38	53.88
1998-99	26.96	26.02	52.98
1999-2000	28.52	28.23	56.75
2000-01	28.11	28.45	56.56
2001-02	28.30	31.26	59.56
2002-03	29.90	32.10	62.00
2003-04	29.41	34.58	63.99
2004-05	27.78	35.26	63.04

समुद्री उत्पादों के निर्यात की संभावना

मत्स्य उत्पादों के निर्यात में एक समान वृद्धि होती रही है। 2004-05 के दौरान देश में 4.37 लाख टन समुद्री उत्पादों का निर्यात किया था जिससे 6188.92 करोड़ रुपए का आमदनी हुई थी। निर्यात के लिए उत्पादों के विविधीकरण के माध्यम से निर्यात की संभावनाओं को बल देने का प्रयास किया जा रहा है। देश में अब हिमित स्क्विड, कटल फिश और अन्य फिनफिशों की किस्मों का निर्यात करना भी आरंभ कर दिया है।

मात्स्यिकी विकास के लिए केंद्रीय प्रायोजित योजनाएं

अंतर्देशीय मात्स्यिकी और जलकृषि का विकास

समुद्री मात्स्यिकी, बुनियादी सुविधाओं और पोस्ट हार्वेस्ट संचालनों का विकास

राष्ट्रीय मछुआरा कल्याण योजना

मात्स्यिकी क्षेत्र के डाटाबेस और भौगोलिक सूचना प्रणाली का सुदृढ़ीकरण

मात्स्यिकी संस्थानों को सहायता

विभाग के नियंत्रण वाली मात्स्यिकी संस्थान

केन्द्रीय मात्स्यिकी नौचालन और इंजीनियरी प्रशिक्षण संस्थान(सिफनेट)

केन्द्रीय तटीय मात्स्यिकी इंजीनियरी संस्थान (सीआईसीईएफ)

भारतीय मात्स्यिकी सर्वेक्षण, (एफएसआई)

एकीकृत मात्स्यिकी परियोजना